ISSN : 2583-2948

ओ फ्रीडा

मनीषा कुलश्रेष्ठ
कवयित्री

ओ फ्रीडा

अपने बालों को खोल दो

उनमें बंद मकड़ी को कैनवास पर चलने दो

ये जो गुँथे हैं बालों में

अजीब से जंगली फूल

ये तुम्हारी जलती कामना में राख हुए जाते हैं

इन्हें हहराते आवेग में बहा दो न!

तुम्हारा चेहरा एक हस्ताक्षर भर है तुम्हारा

तुम्हारे तंतु तो मुझ तक फैले हैं

तुम्हारी जुड़ी भौंह पर

मैं उंगली रखती हूं

तुम मुस्कुराती हो

मेरे सीने पर पलट कर तर्जनी रखती हो

मैं मुस्कुराती हूं

कुनमुना कर नींद में

ISSN : 2583-2948

क्लियोपैट्रा

इतनी सुर्ख़ कि
वे लाल की जगह काली दिखने लगें
ऐसी अंजीरों की टोकरी में किसने छिपाया था
अंजीरों सा ही चमकीला मिश्री फणिनाग?

क्लियोपैट्रा
अपने पिता की आँख का नूर
यही था तुम्हारे नाम का अर्थ
तुम्हारी जिजीविषा इतनी कम न थी
तुम नहीं कर सकती थी आत्मघात
अपने पहले और अंतिम प्रेम
अलेक्जेंड्रिया के लिए रची थीं
तुमने प्रेम की संधियाँ
सीज़र के बाद मार्क एंटनी
तो आक्टेवियो को बांधना मोहपाश में
कहीं दुष्कर न होता तुम्हारे लिए

रोम की आँख की किरकिरी थीं तुम
इतिहास में अडिग!
स्वर्ण की धूल की आँधियों
स्वर्ण के वरक़ों वाली किताबों का नगर था अलेक्जेंड्रिया
कोई भी उसे पाना चाहता

ISSN : 2583-2948

प्रेम करते हुए सीज़र को भी तुमने

बहुत कुछ उपहार में दिया

स्वर्ण रेशों का कालीन, स्वर्ण और स्वर्णिम गुम्बदों से वक्ष

मिश्री शाहकार सी वह तनी नाक

तराशे ऊंचे स्तंभों की जांघें

टोलोमी साम्राज्य के विशुद्ध रक्त में

तुमने मिला लिए रोमन बीज

मिस्र के आज़ाद अस्तित्व के लिए

अगर तुम करतीं भी आत्मघात तो यूं न करतीं

करतीं विषधर का अंतिम गहरा चुम्बन

उसकी आँख में आँख डाल

दुरभिसंधिसुर्ख ऐसी कि

काली लगने लगें ऐसी अंजीरों की टोकरी में

हाथ डाल चुपचाप

तुम नहीं मर सकती थीं तुम

क्लियोपैट्रा!